



बागवानी और वानिकी पौधों की सस्य क्रियाएं

राजेश कथवाल*, सुलेमान मोहम्मद** और विरेन्द्र दलाल***

वर्ष 2019 के आंकड़ों के अनुसार भारत में कुल वन क्षेत्र 712,249 वर्ग किलोमीटर है जो कि कुल भौगोलिक क्षेत्र का 21.67 प्रतिशत है। इसके विपरीत देश में वन और वृक्ष क्षेत्र 807,276 वर्ग किलोमीटर है और यह कुल भौगोलिक क्षेत्र का 24.56 प्रतिशत है। भारत में वृक्ष क्षेत्र लगभग 93815 वर्ग किलोमीटर है जो कुल भौगोलिक क्षेत्र का मात्र 2.85 प्रतिशत है। पश्चिमी घाट के क्षेत्र में सर्वाधिक वृक्ष आवरण क्षेत्र 8.31 प्रतिशत है। वृक्ष आवरण क्षेत्र में महाराष्ट्र का प्रथम स्थान है। यहाँ का वृक्ष आवरण क्षेत्र 9831 वर्ग किलोमीटर है। दूसरे स्थान पर राजस्थान है जिसका वृक्ष आवरण क्षेत्र 8266 वर्ग किलोमीटर है। इस आंकलन से पता चलता है कि हमारे देश में वृक्षों का अभाव है, जिससे आने वाले समय में प्रदूषण बढ़ेगा और मानव शरीर पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा।

किसान अपने खेत में पानी के नालों के किनारे, कोठों के आसपास, ट्यूबवैल वाले



खेजड़ी की शाखाओं से पौष्टिक चारा

स्थानों पर फलों के पौधे या वानिकी के पौधे लगाने में काफी रुचि लेते हैं।

उचित समय

खेजड़ी-अप्रैल से जून तक बीज पककर तैयार हो जाते हैं। बीजों से पौधे तैयार करने का समय जुलाई तक चलता है। वृक्षारोपण करने के लिए 5x5 मीटर की दूरी रखें। वृक्षारोपण के 5-7 वर्षों के बाद प्रत्येक पंक्ति से एक से दूसरे पौधे को हटा दिया जाता है। इस प्रकार वृक्ष से वृक्ष और पंक्ति से पंक्ति की दूरी 10 मीटर हो जाती है।

रोहिड़ा-मई और जून के दौरान इसका

फल तैयार हो जाते हैं। पौधों की अंकुरण क्षमता फसल के तुरन्त बाद होती है। इसे भी जुलाई में तैयार किया जा सकता है। जब पौधा 9-12 महीने का हो तब उसे भुरभुरी मिट्टी में गहरा गाड़ दें जिससे कि वह अधिक देर तक जीवित रहे और बढ़ सके।

नीम-इस पौधे का वृक्षारोपण जुलाई-अगस्त में किया जाता है। वृक्षारोपण करने के लिए अप्रैल-मई में गड्ढे खोद लेने चाहिए। पौधशाला से दो वर्ष की अपेक्षा एक वर्ष पुरानी पौध अधिक अच्छी होती है।

शीशम-इस पौधे का वृक्षारोपण भी



सड़क के किनारे नीम के पेड़

*सहायक वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान विभाग), रामधन सिंह बीज फार्म, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार; **वरिष्ठ वैज्ञानिक (बागवानी विभाग), क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान केन्द्र, बूड़िया, यमुनानगर; ***सहायक वैज्ञानिक (वानिकी विभाग), बालसमन्द अनुसंधान फार्म, हिसार।



सिंचाई के नालों पर शीशम के पेड़

जुलाई और अगस्त के महीने में आसानी से किया जा सकता है। इसके लिए 30 सेंटीमीटर गड्ढे पहले ही खोद लेने चाहिए। कतार से कतार की दूरी 4 मीटर व पौधे से पौधे की दूरी 2.5 मीटर रखें। मिट्टी के साथ 2 किलोग्राम अच्छी सड़ी गोबर की खाद (एफ.वाई.एम.) और 15-20 मिलीलीटर क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. मिला दें।

बबूल-बबूल की बुआई के लिए जून व जुलाई सबसे उपयुक्त समय होता है। पौधे लगाने के लिए 4x4 मीटर की दूरी रखें। जहाँ अधिक मात्रा में वृक्ष लगाने हों वहाँ 5 से 10 मीटर की दूरी, एक कतार में वृक्ष लगाने के लिए रखें।

सफेदा-इस पौधे का वृक्षारोपण मानसून के दौरान जुलाई-अगस्त में होता है। जहाँ सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध हैं, वहाँ पौध सितम्बर से फरवरी तक लगाएं। पौधों के अच्छे जमाव के लिए 3-4 सिंचाइयों की आवश्यकता पड़ती है। गड्ढों का आकार 30-40 सेंटीमीटर गहरा होना चाहिए।

पोपलर- खेतों में इस वृक्ष के पौधे फरवरी के महीने में लगाने चाहिए। वृक्षारोपण से एक महीने पहले तीन फुट गहरे गड्ढे खोदकर मिट्टी बाहर निकाल दें। पोपलर लगाने के लिए गड्ढे तीन फुट गहरे अवश्य खोदें ताकि तेज हवा में पौधे न गिरें। ऊपर वाली 1.5 फुट मिट्टी में खाद की मात्रा 5 किलोग्राम की दर से मिलाकर पौधा लगाने के लिए तैयार रखें। पौधरोपण करने के लिए एक वर्ष की आयु वाले पौधों का चयन करें, जिनकी ऊँचाई 5-6 मीटर हो तथा तना अंगूठे की मोटाई का व बिना शाखाओं का हो।

महानीम-इसका वृक्षारोपण अक्तूबर के महीने से खोदे हुए गड्ढों में करना चाहिए। महानीम का वृक्ष शुष्क इलाकों में फसलों की तेज हवाओं से रक्षा करने और मृदा अपरदन को रोकने के लिए लगाया जाता है।

बागवानी के पौधे लगाने का समय

हरियाणा प्रदेश की जलवायु के अनुसार बाग लगाने के लिए जनवरी - फरवरी व अगस्त से अक्तूबर का समय अति उत्तम है। अंगूर, आड़ू, अलूचा, अनार, नाशपाती, आंवला व बेर आदि लगाने के लिए 15 दिसम्बर से 15 फरवरी तक का समय बहुत अच्छा रहता है। सदा हरे रहने वाले पेड़, जैसे नीबूवर्गीय पेड़, अमरूद, आम, बेर, लीची आदि को अगस्त से अक्तूबर तक लगाना चाहिए। इस समय मौसम कुछ ठण्डा व नम हो जाता है।

वैज्ञानिक सस्य क्रियाएं

जो किसान फल उत्पादन क्षेत्र में विकास करना चाहते हैं उन्हें विभिन्न वैज्ञानिक सस्य क्रियाओं का ज्ञान होना आवश्यक है।

नीबू-नीबू में नई पत्ती निकलने से पहले अर्थात् फरवरी-मार्च में व फल की बढ़ोतरी के समय अर्थात् अप्रैल से जुलाई में और मध्य सितम्बर से अक्तूबर के अंत



नीबू

में सिंचाई करना आवश्यक है। सर्दियों में 20 दिनों व गर्मियों में 10 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। नीबू के नए बाग में पत्तियों के बीच में लोबिया, मूंग, चना व मटर जैसी दाल वाली फसलें बोई जा सकती हैं।

अमरूद-अमरूद में सिंचाई 10-15 दिनों के अंतराल पर करनी चाहिए। फूल व फल लगने के दौरान सप्ताह में एक बार सिंचाई अवश्य करनी चाहिए। बाग लगाने के 3-4 साल तक अमरूद के पौधों के बीच पपीता, लोबिया और चना आदि बोया जा सकता है।

आम-आम में फलों को गिरने से बचाने के लिए यूरिया के दो प्रतिशत घोल से पेड़ पर अप्रैल-मई के महीने में छिड़काव करना चाहिए। आम के बाग को लगाने का उचित समय जुलाई-सितम्बर तथा फरवरी-मार्च है। एक से तीन वर्ष के पौधों में 5-20 किलोग्राम गोबर की खाद, 100-200 ग्राम यूरिया, 250-500 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट व 175-350 ग्राम पोटेशियम सल्फेट का प्रयोग करना चाहिए।

बेर-पौध को लगाने का समय अगस्त-सितम्बर है तथा पौधों को 15 जनवरी से फरवरी के प्रथम सप्ताह तक लगाया जा सकता है। सिंचित क्षेत्रों में पौधे से पौधे व कतार से कतार की दूरी 10 मीटर रखनी चाहिए। बेर के छोटे पौधों में 4-6 दिन के अंतर पर सिंचाई करनी चाहिए।



बेर

आंवला-इसके पौधों को अगस्त से सितम्बर व 15 जनवरी से 15 फरवरी तक लगाना चाहिए। गर्मियों में जब तक पौधे जड़ न पकड़ लें, हर 7-10 दिनों बाद सिंचाई करनी चाहिए। पौधे को 15 किलोग्राम गोबर की खाद प्रति वर्ष पौधे की आयु के हिसाब से देनी चाहिए। आधा किलोग्राम यूरिया और 2.5 किलोग्राम फॉस्फेट प्रति पेड़ के हिसाब से फरवरी माह व जुलाई में आधा किलोग्राम यूरिया खाद डालनी चाहिए।